एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

नींबू वर्गीय फलों के प्रमुख कीट और उनकी रोकथाम

(*अभिषेक यादव[1] एवं संजीत कुमार[2])
[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (कीट/सूत्रकृमि विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया-उत्तर प्रदेश
[2]वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया-उत्तर प्रदेश
(आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ.वि.वि. कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश)
*संवादी लेखक का ईमेल पता: abhicoa2@gmail.com

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है कृषि में बागवानी का विशेष महत्व है और नींबूवर्गीय फलों का महत्वपूर्ण स्थान है, नींबूवर्गीय फलों में मौसमी, संतरा, नींबू, मीठा नींबू, माल्टा तथा ग्रेप फूट मुख्य हैं। इन फलों में विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है, जो स्कर्वी बीमारी के निदान के लिए सहायक है। इसके अतिरिक्त इन फलों में विटामिन– ए, बी और खनिज तत्व भी पाये जाते हैं, इन सभी फलों पर अनेक कीटों का आक्रमण होता है परन्तु ज्ञान के अभाव में किसान भाई इनका सही नियंत्रण नहीं कर पाते, जिससे इनका उत्पादन व गुणवत्ता घट जाती हैं। इस लेख में नींबूवर्गीय फलों में लगने वाले मुख्य कीटों की पहचान व उनके नियंत्रण की जानकारी का उल्लेख है, ताकि कृषक इन्हें जानकर अपने बागों को इन कीटों से होने वाली हानि से बचा सकें।

कीट एवं रोकथाम

नींबू का सिल्ला–

नींबू का सिल्ला नींबूवर्गीय के सभी फलों का एक प्रमुख कीट है, इस कीट के गोल, चपटे व नारंगी पीले रंग के नवजात व भूरे रंग के प्रौढ़ टहनियों तथा पत्तों से रस चूसते हैं, इनके रस चूसने से पत्ते व टहनियाँ पीले पड़ कर अंत में सूख जाते हैं, जिससे उपज व फलों के गुणों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। यद्यपि यह कीट साल भर सक्रिय रहता है, परन्तु मार्च से अप्रैल व जुलाई से सितम्बर तक अधिक हानि पहुंचाता है, वर्ष भर में इसकी 8 से 10 पीढ़ियां होती हैं। माल्टा और मीठे नींबू पर इसका प्रकोप अधिक होता है, इसके शिशु 10 से 35 दिनों में विकसित होकर प्रौढ़, बन जाते हैं व प्रौढ़ की अपेक्षा अधिक हानिकारक होते हैं।

नींबू का पत्ती सुरंग कीट–

पत्ती सुरंग कीट नींबूवर्गीय फलों के पत्तों को नुकसान पहुंचाने वाला एक प्रमुख कीट है, इसकी हल्के पीले रंग की बारीक सूण्डियां पत्तों की दोनों सतह पर टेड़ी–मेड़ी व चमकीली सुरंगें बनाती हैं, प्रभावित पत्तियां व टहनियां सूख जाती हैं, और पौधों की बढ़वार रुक जाती है। प्रकोपित पत्तियों पर फफूंदी व कोढ़ जैसी बीमारी हो जाती है, इसका प्रकोप नींबूवर्गीय फलों में फरवरी से मार्च तथा मई से अक्तूबर तक अधिक होता है। इस कीट की सूण्डियां 5 से 30 दिन तक सुरंगों में रह कर पत्तों को खाती हैं, इसका प्रकोप मुलायम और रसदार पत्तों पर अधिक होता है तथा नर्सरी में छोटे पौधे इसके प्रकोप से नष्ट हो जाते हैं।

रोकथाम के उपाय–

नींबूवर्गीय फलों का सिल्ला व पत्ती सुरंग कीट के अधिक प्रकोप होने की अवस्था में रोकथाम के लिए मैलाथिान 0.005 प्रतिशत या NSKE 5% का छिड़काव करें।

काली मक्खी– इस कीट के नवजात चपटे, अंडाकार, कांटेदार व गहरे भूरे या काले रंग के होते हैं, जबकि प्रौढ़ हल्के नीले रंग के होते हैंद्य शिशु व प्रौढ़ दोनों ही मुलायम पत्तों से रस चूसते हैं, जिसके कारण पत्ते पीले होकर मुड़ जाते हैं तथा सूख कर गिर जाते हैं। शिशु 25 से 70 दिनों तक पत्तियों की

निचली सतह से चिपके रहकर प्रौढ़ में बदल जाते हैं, परन्तु प्रौढ़ ज्यादा दिन जीवित नहीं रहते, वैसे तो यह कीट मार्च से सितम्बर तक सक्रिय रहते हैं, परन्तु मार्च से अप्रैल व अगस्त से सितम्बर में इनका प्रकोप अधिक होता है। साल में इसकी दो पीढ़ियां होती हैं।

रोकथाम के उपाय

1. नींबूवर्गीय फलों के बाग में मत्रा से ज्यादा पौधे न लगाएं व पानी की निकासी पर विशेष ध्यान दें।
2. इस कीट के प्रबन्धन के लिए क्लोरपाइरिफॉस 20 ई0सी0 2.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से इसका नियन्त्रण किया जा सकता है।

नींबू की तितली–

नींबूवर्गीय फलों के पौधों का यह मुख्य कीट हैद्य जिसकी छोटी सूण्डियां भूरे काले रंग की होती हैं, जिन पर सफेद धब्बे होते हैंद्य विकसित होने पर ये हरे रंग की हो जाती हैं और आसानी से दिखाई नहीं देतीं। ये सूण्डियां मुलायम पत्तियों को किनारों से मध्य शिराओं तक खाती हैं। नर्सरी और छोटे पौधों व मुलायम पत्तियों पर इसका नुकसान अधिक होता है। 14 से 30 दिनों में ये सूण्डियां पूरी विकसित हो जाती हैं। माल्टा पर इसका प्रकोप अत्यधिक होता है, इस कीट की केवल सूण्डियां ही हानि पहुंचाती हैं, तथा सितम्बर से अक्तूबर में इसका प्रकोप अधिक होता है। अप्रैल से नवम्बर तक इसकी 4 से 5 पीढ़ियां होती हैं। यह प्यूपा की अवस्था में शीत निष्क्रिय रहती हैं।

रोकथाम के उपाय

1. जहाँ तक संभव हो, सूण्डियों व प्यूपा को हाथ से पकड़कर नष्ट करें।
2. इस कीट के प्रबन्धन के लिए नुवान 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से इसका नियन्त्रण किया जा सकता है।

दीमक– यह एक प्रकार का सामाजिक कीट हैद्य जिसका प्रकोप नर्सरी व शुष्क रेतीली जमीन में लगाये नए–नए पौधों में अधिक होता है। दीमक जमीन में रहकर वृक्षों की जड़ों को खाती है और तने को खोखला कर ऊपर की ओर बढ़ती है, वृक्षों की बाहरी सतह पर मिट्टी की सुरंग बनाकर छाल को खाती है।

जीवित पौधों के साथ–साथ यह सूखी लकड़ियों को भी हानि करती है। यह कीट पूरे वर्ष सक्रिय रहता है, किन्तु गर्म व शुष्क मौसम में इसका प्रकोप अधिक होता है। दीमक प्रायः सभी फलदार वृक्षों को हानि पहुंचाती है।

रोकथाम के उपाय

1. खेत को साफ–सुथरा रखें और कोई भी चीज, जैसे ढूंठ, गली–सड़ी, सूखी लकड़ी इत्यादि न रहने दें, जो दीमक के प्रकोप को बढ़ावा देती है।
2. नींबूवर्गीय फलों के वृक्षों के आसपास गहरी जुताई करें व पानी दें, जिससे दीमक का प्रकोप कम हो जाए।
3. गोबर की हरी व कच्ची खाद प्रयोग में न लायें क्योंकि यह खाद दीमक को बढ़ावा देती है।
4 पौधे लगाने से पहले रासायनिक विधि अवश्य अपनाएं और इसके लिए गढढें में 50 मिलीलीटर क्लोरपाईरिफॉस 20 ईसी 5 लीटर पानी में मिलाकर प्रति पौधा लगाते समय गढढें में ढालें।